मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

ड़ा0 पूनम कुमारी

स्त्री विमर्श आठवें दशक से हिन्दी साहित्य की ज्वलंत समस्या हैं। कोई भी जागरूक रचनाकार इस समस्या से नहीं बच सका है विशेषकर स्त्री लेखिका तो कदापि नहीं। आधुनिक हिन्दी की ख्यात लेखिका मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर है । मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में हम स्त्री – विमर्श की नई चेतना पाते हैं । उनकी महता का असली कारण स्त्री विमर्श से संबधित सवालों से विशिष्ट शैली में जुझने की उनकी शक्ति में है जहाँ स्त्री समाज के सड़े – गले पुराने विधानों को चुनौती देती वे मानवीय स्वतंत्रता के पक्ष में ऐसी सवाल खड़ा करती है जो स्वयं स्त्री के संवैधानिक अधिकारों की जायज माँग तो है ही समाज का मंगलदायक भविष्य भी इसमें छिपा हुआ है।

मैत्रेयी पुष्पा ने एक स्त्री की दृष्टि से एक स्त्री की पीडाओं को समझने की चेष्टा की है । वे लिखती हैं – " वे सब पुरूष –प्रधान समाज के अवसरवादी प्रंसग हैं । एक और पतिव्रता की परिभाषा करता राम के साथ सीता का वन गमन दूसरी ओर निष्ठा को तोडना मर्यादा पुरूषोतम राम का सीता की अग्नि परीक्षा लेना । सीता ने क्यों नहीं माँगा कोई सबूत कि हे भगवान कहे जाने वाले राम तुम भी तो इस अवधि में मुझसे अलग रहे हो , अपने पवित्र रहने के साक्ष्य दो ।" 1

"हजारों साल से दबे – कुचले दलितों नें माथा उठाकर बात करना सीख लिया , हमारी आँखे घुँघट में कब तक झुकी रहेगी इस प्रश्न पर स्त्री सिर उठाने लगी है , और 'प्रश्न मत पूछो का आदेश देने वालो याज्ञवल्क्यों के कलेजे अनायास ही थर्राने लगे हैं। वे हडबडाये हुए इस दुश्चिंता में घुले जा रहे हैं कि कहीं ये ना समझ मूर्ख दासियाँ राजपाट की ओर मुँह करके न बढती चली आये

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास " इदन्नमम " और कहानी संग्रह " गोमा हँसती है" से उद्धृत उपरोक्त पंक्तियाँ हिन्दी कथा साहित्य के नवीन स्त्री विमर्श के सूचक हैं । मैत्रेयी के स्त्री–पात्रों में पुरूषों के दमन और व्यवस्था से टकराने का अपूर्व साहस है । मैत्रेयी पुष्पा अति आत्मा विश्वासी और स्पष्टवादी स्त्री है । अपनी स्वच्छंदप्रियता के कारण ही वे अपने पारिवारिक बेड़ियों को तोड़ कर हिन्दी की स्त्री साहित्यकारो में अपना वर्चस्व कायम किया हैं ।

मैत्रेयी पुष्पा के "मायामृग" 'इदमन्नमम' या चाक की स्त्रियों की दुनिया की शायद ही कोई ईमनदार कथा हो जो अन्ततः सेक्स कथा न हो । जिस समाज में झुठ नारी को हजारो सालों से सिर्फ 'सेक्स' में बनाकर रखा गया हो वहाँ सेक्सविहीन नारी – कथा या तो हवाई आदर्शवाद है या जानबूझ गढा गया झूठ।

मृदुला गर्ग का कहना है कि 'स्त्री' को सेक्स मुक्ति नहीं बल्कि सेक्स से मुक्ति चाहिए किन्तु मैत्रेयी की कथा नारियाँ इस मिथक को तोड़ती हैं। अपनी पूरी शारीरिकता के साथ जीने के संकल्प को ही अपना तथ्य बनाती हैं । उनकी गोभा ,शीलो, मन्दा तथा सारंग नैना जैसी नायिकाएँ जिजीविषा की ऐसी दबंग नायिकाएँ

हैं जहाँ शील – अश्लील नैतिक –अनैतिक की धारणाएँ सहज ही कैचुल तरह उतर जाती है ।

मैत्रेयी पुष्पा ने महिला – लेखन को ड्राइंग बेडरूम दफ्तरों से निकालकर उन गावों – कस्बों तक पहुँचाया है जो अब तक पिकनिकियों या समाज सेविकाओं के माध्यम से हम तक पहुँचता था । अनछुई भाषा अनपहचाने लोग अपरिचित समाज और वहाँ की दुरूह स्थितियों में जूझती औरत की कहानियाँ सुशिक्षित शहरी महिलाओं में बेचैनी पैदा करती है । "इदन्नमम" की सभी स्त्रियाँ अपने लिए निर्धारित मर्यादाओं की लक्ष्मण–रेखा लाँघती हैं कि उपन्यास के नायक दादा पंचम सिंह अपनी राजनीतिक सूझ –बूझ से औरतों को पाँव की जूती बनाये हुए है। यह पुरूष का नारी – शोषण है ।

मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार " इदन्नयम की मंदाकिनी वास्तविक अर्थो में एक जुझारू युवती है । जो केवल परिवार और समाज द्वारा अपने लिए निर्मित बंधनो को ही नहीं तोड़ती वरन् शोषण के विरूद्व भी तनकर खडी हो जाती है। मंदा ऐसी नारी है, जो स्त्री यातना को सहते हुए शोषितों एंव वंचितों की पीडा से एकात्म हो जाती हैं घर परिवार की देहरी लांघकर समाज की उस धुरी पर खडी होती है, जहाँ स्त्री चेतना व दलित चेतना एकाएक होकर जनतंत्र और विकास के सवालो से टकराने लगती है। लेकिन मंदा यह भूभिका थोपी हुई क्रांतिकारी चेतना न होकर भारतीय समाज की नई दिशाओं को तलाशती एक ऐसी स्वतः स्फूर्त चेतना है, जो मेधा पाटकर, बाबा आम्टे, बाबा हजारे और बी डी शर्मा के संघर्षों का स्मरण कराती है ।"

इदन्नमम की मंदा अपनी माँ प्रेम द्वारा वैधव्य के बाद भी दुसरी शादी कर लेने पर भी घृणा नहीं करती । वह किसी स्त्री के स्वाभाविक दैहिक भूख से इनकार नहीं करती । उसके मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करते हुए मैत्रेयी लिखती हैं –"उतर में चुप है वह स्वीकार न अस्वीकार । मगर नकारना भी नहीं चाहती हैं आदिम इच्छा के होने को ।नींद हैं ,भय हैं,भूख हैं उसी तरह चाह है । आवेग– संवेग है, तृप्ति की अबूझ कामना है, अनुभूत दैहिक तंरगे है ।" 3

"दैहिक तरंगों की आदिम भूख को स्वीकार करते हुए भी मंदा भोगवादी एंव स्वेच्छा चारिणी नहीं है । वह मकरन्द से प्यार करते हुए भी बहुत संयत और संयमित है। वस्तुतः यह उपन्यास औरत होने की लड़ाई का उपन्यास है । कुसुमा सगुना आदि नारी पात्रों में

साहस और निरीहता का अद्भुत संयोग है । तीनों पात्र इस कडवी सच्चाई को प्रस्तुत करते हैं कि समाज द्वारा निर्धारित मानदण्डों के विरोध में साहसपूर्ण विकल्प का चयन उनके लिए अंततः कारूणिक और त्रासद अंत का चयन है।

झुलानट की शीलो अपने पति सुमेर द्वारा उपेक्षा और दूसरी शादी कर लेने के बावजूद उसे मुक्त नहीं करती ।

वह अपने देवर से प्रेम करती है दैहिक संबंध भी स्थापित करती है,लेकिन अपनी सास की सहमति के बावजूद उसके साथ शादी के बंधंन में नही बंधती । वह सुमेर के संपति पर भी अधिकार चाहती हैं। बदले की भावना के कारण वह सुमेर को न तो मुक्त करती है और न तो उसकी सम्पति से अपना दावा छोडती हैं। उसकी सास शीलो की इस चालाकी की ओर संकेत करते हुए कहती है– सुमेर तु यह सोच कि मैंने अपना अखेल नादान बेटा काए को बाँधा था इस हथिनी के पाँवो में बस इसी कारण कि तेरे हिस्सा की धरती न चर जाए ।पर बेटा ,इस हथिनी की देह में चालाक लुखरिया का मगज है,यह पता नही था । हाय मैं सिरिनी नहीं जानती थी कि साँपिन को दूध पिलाकर बिस भर रही हूँ बेटा। की जिंदगानी में एक दिन यही डस लेगी" 4

इस तरह शीलो अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। वह अपने पति के विरूद्व दृढ़ संकल्पों के साथ संघर्ष करती है और उसकी सम्पति में अपना भी हिस्सा चाहती है ।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो के विवेचन –विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मैत्रेयी जी शोषित –उत्पीड़ित नारी वर्ग की प्रतिनिधि उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों का फलक बहुत विस्तृत है जिसमें वे समाज की वैयक्तिक , सामूहिक ,ग्रामीण , नागरिक एवं राजनीतिक समस्याओं को उठाने को तत्पर रहती है। मैत्रेयी जी ने "अल्मा कबूतरी" उपन्यास में इसे दर्शाया है , जब राणा पर कुता हमला कर देता है तब घाायल पुत्र को देखकर माँ की क्या स्थिति होती है

"जो घाव भर गए है, फिर से उधेड़ दे कोई, सहन नहीं कर पाएगी वह । उससे राणा की मौत सहन नहीं हो सकती । होती तो सुई खरीदने के लिए चोरी पर क्यों उतर आती अगर गहने उतारते समय लड़की शोर मचाती तो वह हत्या करने से गुरेज न करती । कज्जा की बेटी का गला दबाकर सोच लेती –मेरे राणा पर कुकुर छोडने वाली बिरादरी की संतान का यही हश्र होना चाहिए। माता अपने पुत्र का सदैव हित चाहिए है । उसके लिए मंगलकामना किया करती है और उसका दुख दर्द दुर करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। भारतीय समाज में स्त्री कभी शारीरिक यातणा और कभी मानसिक यंत्रणाओ को भोगती है ।

उपन्यास "चाक" में ब्रज प्रदेश की कथा है जिसे ग्रामीण स्त्री के सशक्तिकरण के संदर्भ का उपन्यास कहा जा सकता है । "चाक की सारंग संघर्ष का जीवंत प्रतीक है। प्रतिहिंसा प्रेरित सारंग की लडाई व्यापक सामाजिक मुक्ति का रूप ग्रहण कर लेती है । वह रेशम की हत्या के विरूद्व संघर्ष के लिए उठ खड़ी होती है ।

आलोचक डा परमानंद श्रीवास्तव ने सारंग की संघर्षशीलता का परिचय देते हुए लिखा है – "यह उपन्यास" फेमनिस्टकिटीक " भर नहीं हैं । उपन्यास अपनी समग्रता में संकेत है कि मैत्रयी में मानवीय भावो की सघन अंतरंग और संबंधो की जटिलता को चित्रित करने की अनोखी क्षमता मौजूद है। उपन्यास कैसे एक व्यक्तिगत परिवारिक , सीमित अर्थ में सामिजक त्रासदी से आगे बढ कर अंत में अपना एक राजनीतिक अर्थ पा लेता है, इसे नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता ।"

उपन्यास "चाक" में एक स्त्री पुरूष के भीतर पुंसत्व जगाने के लिए देह समर्पण करती है और दूसरे संदर्भ में एक स्त्री अपने संघर्ष के सहचर मित्र के घायल होने पर अचानक इस हद तक आसक्ति अनुभव करती है कि उसके प्रति समर्पित हो जाती हैं।

अर्थात दोनो प्रसंग यौन शुचिता की बनी बनाई धारणा को तोडते हैं। यह दोनो स्त्रियाँ क्रमशः चाक की कलावती चाची और चाक की नायिका सारंग हैं। इस उपन्यास में एक संवाद है कि "हम जाट स़्त्री बिछुआ अपने जेब में रखती है जब चाहती है पहन लेती है और जब चाहती है उतार देती हैं।

इस संवाद के बहाने मैत्रेयी पुष्पा स्त्री में बगावत के बीज बोना चाहती है । इन दोनो स्त्री चरित्र ने मैत्रेयी को एक समय चर्चा के शिखर पर बिठा दिया था । सारंग पिछड़े गाँव की स्त्री होते हुए भी व्यक्तिगत संघर्ष को पूरी दृष्टि से समाजिक संघर्ष में बदलती हैं और स्त्री की मुक्ति का एक अनोखा दर्शन प्रस्तुत करती है । वास्तव में मैत्रेयी पुष्पा आंचलिकता की इस जमीन पर खड़ी हैं जिस पर फणीश्वर नाथ रेणु खड़े मिलते हैं ,लेकिन मैत्रयी पुष्पा रेणु से भी आगे हैं।

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आज की जागरूक नारियाँ सिर्फ स्वप्न नहीं देखती हैं और न पुरूष की सहायता के लिए बैठी रहती है बल्कि वे स्वयं आत्मनिर्भर होकर आगे बढती है पुरूष प्रधान समाज अनेक कठिनाइयाँ पैदा करता है , उनकी राह को रोकने के तरह–तरह का प्रतिबंध लगाता है किन्तु वे रूकती नही हैं । जाने –अनजाने परिस्थितिवश ऐसी स्त्रियों की दैहिक शुचिता भंग हो जाती है लेकिन इसकी चिंता किये बिना , मैत्रेयी के कथा साहित्य की स्त्रियाँ लक्ष्य तक पहुँच कर ही दम लेती है । घर परिवार समाज और राजनीति के पाखंडी मुखौटे को वेपर्द करती मैत्रयी की स्त्रियाँ पितृसतात्मक वर्चस्व और शोषण के विरूद्व संघर्ष करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 इदन्नमम , मैत्रयी पुष्पा पृ 0 269

2 गोमा हँसती हैं , समय मेरे संदर्भ,मैत्रयी पुष्पा

3 इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा प्र0 268

4 झूला नट , मैत्रेयी पुष्पा

5 चाक , मैत्रेयी पुष्पा ,पृं 104

अध्यक्ष – हिन्दी विभाग ,

एस•बी• कॉलेज ,

आरा